सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दिनांक 25 अक्टूबर 2015, गाजियाबाद

! राधा–स्वामी.!

हमारे हाथ में कुछ भी नही है, ना जन्म हमारे हाथ में है, ना मरण हमारे हाथ में है। जन्म और मरण के बीच का जो समय है फिर वो कि अधिकार से हमारे हाथ में है। इस संसार में हमारा कुछ नही है। हम कठपुतलियाँ है और डोर मालिक के हाथ में है। हमारे पास क्या है? हमारे पास सिर्फ अहंकार है, ये मेरा घर है, ये मरी गाडी है, ये मेरा बंगला है, ये मेरा Bank Balance हैं। हम इच्छा करते हैं कि हम हमारा जन्म किसी अमीर के घर में हो, लेकिन किसी झुग्गी झौंपडी में हो जाता है, तो जन्म कहाँ है हमारे हाथ में। हम सोचते हैं जब हमारी मृत्यु हो तो हमारे पास पोते–पोती, बेटा–बेटियाँ सब हमारे पास हो और सबको मैं देखूँ, लेकिन सडक पर एक ट्रक आता है और कुचल कर जाता है हमको। G.D. Birla उस टाईम India का Richest Man था, आधा हिंदुस्तान उसका था। कलकत्ता की आधी फैक्ट्रियाँ उसकी थी। वो लंदन गया किसी Conferrance में, होटल में ठहरा था। सुबह उठा, बगीचे में ठहलने लग गया, ठहलते–2 Heart Attack हो गया और वहीं मर गया। मृत्यु भी हमारे हाथ में नही है, अब जन्म और मृत्यु के बीच का जो समय है, वो हमारा किस अधिकार से है? हमारे हाथ में कुछ भी नही है, हम सोचते हैं अपने बेटे को कलेक्टर बनाएगें, लेकिन क्लर्क बन के रह जाता है। हम सोचते हैं बेटा हो जाए, लेकिन बेटे के चक्कर में बेटियों की लाईन लग जाती है। हम सोचते हैं हमारी शादी किसी राजकुमार के साथ हो जाए लेकिन किसी शराबी के साथ हो जाती है और जीवन भर तंग करता है। फिर है हमारे हाथ में कुछ? हमारे हाथ में कुछ नही है सिर्फ एक चीज है हमारे हाथ में, वो है अहंकार। मैं हूँ, मैं ये कर सकता हूँ, मैं वो कर सकता हूँ, मैने ये किया। लेकिन सब कुछ उसी मालिक का है।

अंग्रेजी में कहते हैं– Man's Destiny in his own hand. यानि हमारा जो भाग्य है वो हमारे हाथ में है, किसी हद तक तो सच है, लेकिन इस जन्म का भाग्य हमारे हाथ में नही है। हाँ अगले जन्म का भाग्य हमारे हाथ में हैं। आप इस जन्म को सुधारो, तो अगला जन्म आपका अच्छा होगा। लेकिन इस जन्म का लेखा जोका पहले ही तय हो चुका है। कैसे? हमारे पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से। जब हम अपनी जन्म पत्री को लेकर जाते हैं किसी ज्योतिषी के पास, तो ज्योतिषी उसको पढकर बताता है कि आप इतना पढोगे, आप ये काम करोगे, आप इतना जीओगे। वो कहाँ से बताता है? जन्मपत्री में लिखा है तभी तो बताता है, वो लिखा कैसे गया? वो लिखा गया हमारे पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से।

वहाँ होशियारपुर में एक संस्था है उसको बोलते हैं–भृगु संस्था। भृगु ऋषि था, उसने भृगु शास्त्र बनाए। वहाँ बहुत सारे शास्त्र हैं, वहाँ आपको सिर्फ अपना नाम बताना है, जन्म तिथि भी नही। वहाँ टाईम लगता है, वो आपसे 2–3 दिन या 1 सप्ताह का टाईम लेंगे, और उन शास्त्रों में देखकर आपके सारे जीवन का लेखा जोका आपको दे देंगे। उन शास्त्रों में हरेक मनुष्य के पिछले जन्म का, इस जन्म का और अगले जन्म का लेखा जोका लिखा हुआ है।

एक बार होशियार पुर में परमदयाल जी महाराज सत्संग दे रहे थे, तो एक बीमार आदमी आया, उस आदमी ने कहा– महाराज जी मुझे कैंसर है। तो परमदयाल जी महाराज को जिज्ञासा हो गई कि इस जन्म में उसको कैंसर कैसे हो गया? उन्होने अपने एक आदमी को बुलाया और उससे कहा– ये नाम है और तुम जाओ भृगु संस्था में और इसके बारे में पता लगाओ। तो वो भृगु संस्था में गया और वहाँ 2–3 दिन बाद उन्होने उसके बारे में पता निकाला। उसके बारे में क्या था? वो पिछले जन्म में एक सेठ के पास मुनीम था और सेठ मर गया और उस आदमी की नीयत बिगड गई, और उसने सेठ का सारा पैसा हडप लिया और सेठ के बीबी बच्चों को बेघर कर दिया। ये निकला

उसके पिछले जन्म का हुलिया। फिर इस जन्म का लिखा आया था कि ये बचेगा नही। ये Information आ गई परमदयाल जी महाराज के पास। परमदयाल जी महाराज बोले– इसका कुछ नही हो सकता, और कुछ दिनो बाद वो मर गया। मेरे कहने का मतलब यह है कि Astrology जो है, वो एक Perfet Science है। लेकिन एक तो हमारी जन्मपत्री बनाने बाला सही होना चाहिए और दूसरा उसको पढने वाला Correct आदमी होना चाहिए, तो हमारा सारा लेखा–जोका Advance में पता लग सकता है, कि हम कहाँ से आये, क्या करने आये, और हमको जाना कहाँ है?

Man's Destiny in his own hands

इस जन्म की Destiny हमारे हाथ में नही है। लेकिन अगले जन्म की Destiny हम खुद बना सकते हैं।

गुरू भक्ति रहे मेरे अंग संग, करूँ काल कर्म को अंग भंग।

इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब है–

जिसके सिर पर हाथ गुरू का, बाल ना बाँका होय।

हमारे मुरैना बाले आचार्य हैं केदार लाल गौड, 5–6 साल पहले की बात है, वो मेरे पास आये और कहने लगे– महाराज जी मेरे साथ अक्सर यह इत्तफाक होता है कि जब भी कहीं रास्ते में जा रहा होता हूँ तो अचानक एक साँप निकल जाता है, लेकिन मुझ पर Attack नही करता है, ऐसा कई बार हुआ है। ऐसा क्यों हो रहा है? मैने उससे एक ही सवाल पूछा– आपने नामदान लिया हुआ? वो बोले– हाँ, मानव दयाल जी महाराज से लिया हुआ है। मैंने उनसे कहा– मैं समझ गया। मानव दयाल जी महाराज की Class में कोई फैल नही हुआ है। मैने उनसे कहा– तुमने पिछले जन्म में किसी की हत्या की। ना जाने किसको मारा? किसी जानवर को या किसी और को। वो इस जन्म में साँप बनकर आया है और आपसे बदला लेना चाहता है। लेकिन जब वो आपके सामने खडा हो जाता है तो आपके सीने में मानव दयाल महाराज को देखता है और इसलिए वो आप पर Attack नही कर सकता।

जिसके सिर पर हाथ गुरू का, बाल ना बाँका होय।

मानव दयाल जी महाराज एक बार हवाई जहाज से अमेरिका जा रहे थे और जहाज का इंजन बंद हो गया। पायलट ने Announce कर दिया आप सब तैयार रहिए, हो सकता है जहाज को पानी में उतारना पडे। तो जहाज में अफरा तफरी मच गई, लेकिन मानव दयाल जी महाराज सीट पर बैठे हुए अपने गुरू का ध्यान करने लगे। तो कुछ समय हवाई जहाज का इंजन फिर से चल पडा। तो पायलट ने Announce किया– जहाज का इंजन चल गया है। You are Safe, इसको बोलते हैं–

जिसके सिर पर हाथ गुरू का, बाल ना बाँका होय।

हमारे सिर पर गुरू का हाथ हमेशा कब रहता है? जब हम गुरू के समर्पित हो जाएँ। समर्पित का मतलब है–Total Surrendor, 100% समर्पण। आज के जमाने में 100% समर्पित कोई नही हो सकता। गुरू नानक देव जी कहते हैं– लाखो मध्य मत गिनो, कोटिन में कोई एक। लाखों में नही करोडो में कोई एक होता है जो गुरू के समर्पित होता है। उस आदमी को मैंने देखा है, वो थे शब्दानंद जी महाराज। मानव दयाल जी महाराज कहते थे– मैं शब्दानंद को हुक्म देने से पहले 10 बार सोचता हूँ, अगर मैं उसको चलते जहाज से कूदने को कहूँगा, तो वो सवाल नही करेगा और कूद जाएगा। क्योंकि, क्यों का मतलब ही नही होता। अगर आपने क्यों कहा, इसका मतलब तुम 100% समर्पित नही हो। गुरू के आगे क्यों का कोई शब्द ही नही है। ये जो संतमत है इसमे How & Why नही चलता। There are Millions of Questions , जिनका किसी के पास कोई जबाब ही नही है। आप मुझसे पूछोगे ये सूर्य इतना गर्म क्यों है? पेड के पत्ते हरे ही क्यों होते हैं? तो मैं क्या जबाब दूँगा, किसी के पास इसका कोई जबाब नही है। लेकिन तुमको हर सवाल का

जबाब मिलेगा, कौन देगा? तुम खुद दोगे। तुमको हर सवाल का जबाब खुद ढूँढना पडेगा। जब आप इन सवालों का जबाब ढूँढने निकलोगे तो आपको सारे सवालों का जबाब मिल जाएगा। शर्त यह है कि तुम गुरू के बताए हुए रास्ते पर चलोगे।

एक होता है गुरूमुख और एक होता है मनमुख। मनमुख वो होंता है जो हमेशा मन की करता है, और मन काल का एजेन्ट है और हमको हमेशा गुमराह करता है, और जब आप मन की करोगे तो आप दुखी रहोगे। एक होता है गुरूमुख, गुरूमुख वो होता है जो गुरू के कहने पर चलता है, और जब आप गुरू के कहने पर चलोगे तो हमेशा सुखी रहोगे, क्योंकि गुरू आपको कभी गलत रास्ता नही बताएगा। इसलिए आप सुखी रहोगे और सही मंजिल पर पहुँच जाओगे।

एक होता है कर्म और एक होती है करनी। कर्म वो होता है जो हम अपने मन से करते हैं। करनी वो होती है जो हम गुरू के कहने से करते हैं। जब आप तन–मन–धन से गुरू के समर्पित हो जाते हो, फिर You are free फिर आपको चिंता करने की जरूरत नही है। फिर जो भी चिंता करेगा, गुरू करेगा। गुरू कहता है– सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दू धुर दरबारा।

तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

गुरू कहता है, ये जो कुछ भी हो रहा है, ये मैं करता हूँ, तुम्हारे हाथ में कुछ भी नही है, और मैं तुमको अपने साथ ले भी जाऊँगा धुरपद धाम। आपको सिर्फ दो काम करने हैं– अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो और तुम निश्चिंत रहो, और मुझसे प्रेम करो। गुरू तुमसे क्यों कहता है कि अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो, उसके पीछे राज क्या है? इसके पीछे बहुत बडा राज है जो सबकी समझ में नही आता। हम चिंता क्यों करते हैं? चिंता चिता समान है, चिंता हमको दीमक की तरह खोखला कर देती है। इसलिए गुरू कहता है– अपनी चिंताएँ मुझे दे दो। हम चिंताएँ करें क्यों? जब हमारा भाग्य बना हुआ है, हमारे भाग्य की हरेक रेखा बनी हुई है, फिर हम क्यों चिंता करें? देखो तीन दिन है Yesterday, Today, Tomorrow, ये तीन दिन रोज हमारी जिंदगी में आतें हैं। Yesterday यानि बीता हुआ कल, यानि आपकी जिंदगी में जो कुछ हुआ, वो हो गया। उसको आप ना सुधार सकते हो, ना बिगाड सकते हो। कल अगर आपके हाथ से कोई Murder हो हुआ, वो तो हो गया, आप उसको फिर से जिंदा नही कर सकते। इसलिए Yesterday आपके हाथ में नही है, इसलिए Yesterday की चिंता करना, Waste of Time, Waste of energy, ये हो गया Yesterday. अब आता है Tomorrow, यानि आने वाला कल, क्या आपको पता है Tomorrow में क्या होगा? क्या पता आज रात को ही दम निकल जाए? और क्या पता कल मैं रहूं या नही रहूं, और क्या पता कल मेरी लॉटरी निकल जाए? और क्या पता कल ट्रक आए और मुझे कुचल कर जाए। कल का किसी को नही मालूम, तो फिर कल की क्या चिंता करनी? मौज में रहो, कल देखा जाएगा, कल क्या होगा? अब आपके पास बचा Today, सिर्फ Today मेरे हाथ में है। ये आज का दिन मेरे हाथ में है और ये आज का दिन Daily आएगा। इसलिए Live Today, आज के दिन जीओ और हँस के जीओ और खुशी से जीओ। ना Past की चिंता करो, ना भविष्य की चिंता करो। वर्तमान में जीओ, आज के दिन जीओ, आज के दिन खुशियाँ बाँटो। क्या पता कल मैं रहूँगा या नही रहूँगा।

एक आदमी ने संत से पूछा– मालिक से दुआ करने का सही समय क्या है? संत ने कहा– मृत्यु से एक दिन पहले कर लो। तो आदमी ने पूछा– मृत्यु कब आएगी? तो संत ने कहा– रोज सोचो मृत्यु कल आएगी, और आज दुआ कर लो। अगर हम एक सुखी जिंदगी जीना चाहते हैं तों ना हमको Yesterday की चिंता करनी है और ना Tomorrow की चिंता करनी है। हमें आज का सोचना है, Live Today, यानि वर्तमान में जीओ। जितनी खुशियाँ लुटानी चाहो, आज लुटाओ। जब आप आज खुश रहोगे तो रोज आज ही आएगा और फिर चिंताएँ कहाँ रहेंगी? फिर सारी चिंताएँ धुल गई हवा में। यही एक राज है जो गुरू कहता है कि तुम अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो, क्योंकि गुरू तुमको खुश रखना चाहता है, तुमको खुश देखना चाहता है।

तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।

मुझसे प्रेम करो, मुझे तुम्हारे धन का लालच नही है, मुझे तुम्हारी फूल मालाओं का लालच नही है। मैं फूल माला किसलिए पहनता हूँ? तुमको खुश करने के लिए पहनता हूँ, वरना मुझे फूल मालाओं की कोई जरूरत नही है।

नही रूप कोई हैं, सब रूप तेरे।

क्या मतलब हुआ इसका? इसका मतलब हुआ मालिक का कोई रूप नही है, हम सब उसी के रूप हैं। जब हम वही हैं, We are God, फिर हम किस God का दर्शन माँगते हैं? रोज हम तोते की तरह पढते हैं–

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

अंग्रेजी में कहते हैं– Self Realisation is God Realisation, क्या मतलब हुआ? अगर आपको भगवान को Realize करना है तो पहले अपने आपको Realize करना है। Who are you? जब आप अपने आपको Realize करते हो, तो अपने आपको Realize करते–2 एक Stage ऐसी आ जाती है कि आपको पता लग जाता है कि, मैं कौन हूँ? तो आपके मुँह से चीख निकल जाती है, अरे मैं तो वही हूँ जिसको मैं ढूँढ रहा था।

ईरान का एक संत था समस तवरेज। एक औरत के बच्चे को साँप ने ढँस लिया, वो बच्चा लेकर उस संत के पास आ गई और कहने लगी– तुम खुदा के बंदे हो इस बच्चें को जिंदा करो। संत बोला–माई मैं इस बच्चे को जिंदा नही कर सकता। माई जिद कर गई, नही मेरे बच्चे को जिंदा करो। तो संत मजबूर हो गया, वो बच्चे से कहता है– खुदा के हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा नही हुआ। उसने फिर कहा– खुदा के हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा नही हुआ। फिर तीसरी बार कहता है– मेरे हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा हो गया। कुछ समझ आया? क्या समझ आया है? You are God,

नही रूप कोई हैं, सब रूप तेरे।

हम वही हैं और कोई God नही है, और हम ही वेवकूफों की तरह करते हैं– हे भगवान हमको दर्शन दे। कितने मूर्ख हैं हम, हम ही भगवान होते हैं और मूर्खों की तरह चिल्लाते हैं– हे भगवान हमको दर्शन दे। फिर किसकी इच्छा करोगे? और क्यों करोगे? कितने मूर्ख हैं हम।

इसलिए तुसली दास ने लिखा है– महा मोह तम पुंज, अज्ञान के अंधकार का भंण्डार। ये संसार जो है अज्ञान के अंधकार का भंण्डार है। सब लोग मूर्ख हैं, मंदिरों में जाते हैं भगवान के दर्शन करने, हिमालय जाते हैं भगवान को ढूँढने, उन्हें ये नही पता वो मेरे ही अंदर है।

ना मैं काशी, ना मैं मथुरा, द्वारिका में मैं नही।
तेरे ह्रदय में रहता हूँ, निः संदेह मैं।।

दाता दयाल कहते हैं–

कामी तरे क्रोधी तरे, पापी तरे अनंत।
आन उपासक कृतघ्न, तरे ना नाम रटंत।।

कामी भी तर जाते हैं, क्रोधी भी तर जाते हैं, वाल्मीकि डाकू था, वो भी तर गया। लेकिन दो तरह के लोग नही तरते हैं, एक आन उपासक। आन उपासक उसको बोलते हैं– जो अपने को और खुदा को दो समझता है। जिसने भगवान को अपने से अलग समझ लिया, वो कैसे तरेगा? क्योंकि वो भगवान को केदारनाथ में ढूँढ रहा है। वो भगवान को वैष्णो देवी में ढूँढ रहा है। वैष्णो देवी में क्या है? वैष्णो देवी में पानी और पत्थर है, भेड चाल से लोग जाते हैं। जबकि सब कुछ हमारे अंदर है।

जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।
में अभागिन डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।

यानि जिसने खोजा उसे मिला। जो अंदर जाएगा उसे ही तो मिलेगा और जो मन के विचारों में ही खोया रहेगा उसे मालिक कैसे मिलेगा?

तो आगे से कभी किसी चीज की इच्छा मत करना? इच्छा करने से क्या होता है? अगर इच्छा पूरी नही हुई तो दुखी, और अगर पूरी हुई तो लालच बढ गया, फिर दूसरी इच्छा की, वो भी पूरी हो गई, फिर तीसरी इच्छा और फिर चौथी। इसलिए कभी किसी चीज की इच्छा नही करनी चाहिए। आप देखोगे जब आप इच्छा रहित हो जाओगे, You are the Happiest Person of the World, संत क्यों सुखी रहता है? संत इसलिए सुखी है क्योंकि उसकी कोई इच्छा ही नही है। जिस आदमी के पास 99 करोड रू0 हैं और वो इस धुन में लगा है कि कब 100 करोड रू0 हो जांए, He is the Poorest Man, और जिसको शुबह की रोटी मिली और शाम कर रोटी की उसे चिंता ही नही है, He is the Richest Man, अब आप समझ गए ना, कि इच्छा करनी चाहिए या नही। तो इच्छा नही करनी चाहिए।

!! राधा स्वामी !!